हिन्दी विभाग

राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, रोनो हिल्स, दोइमुख, ईटानगर- 791112

Department of Hindi

Rajiv Gandhi University, Rono Hills, Doimukh, Itanagar- 791112

एम.फिल. (हिन्दी)

शिक्षण सत्र 2020-2021 से प्रभावी

एम.फिल., हिन्दी विभाग

पाठ्यक्रम संरचना

क्र.सं	पाठ्यक्रम शीर्षक एवं कोड	अधिकतम अंक	क्रेडिट	शिक्षण अवधि
प्रथम पत्र (अनिवार्य पत्र)				
1	**HIN 611: शोध प्रविधि**	**100**	**4**	**40 घंटे**
द्वितीय पत्र (अनिवार्य पत्र)				
2	**HIN 612 : शोध एवं प्रकाशन नैतिकता**	**50**	**2**	**30 घंटे**
तृतीय पत्र *ऐच्छिक पत्र (ओपन)				
3	**HIN 621 (क) : तुलनात्मक भारतीय साहित्य**	**50**	**2**	**30 घंटे**
	HIN 621 (ख) : हिंदी साहित्य : कविता, कहानी एवं उपन्यास	**50**	**2**	**30 घंटे**
चतुर्थ पत्र **ऐच्छिक पत्र				
4	**HIN 631: हिंदी साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि**	**100**	**4**	**40 घंटे**
5	**HIN 632 : भक्तिकालीन साहित्य और शोध की संभावनाएं**	**100**	**4**	**40 घंटे**
6	**HIN 633 : भारतीय रंगमंच और नाटक**	**100**	**4**	**40 घंटे**
7	**HIN 634 : दलित साहित्य अध्ययन**	**100**	**4**	**40 घंटे**
8	**HIN 635 : आदिवासी साहित्य अध्ययन (भारतीय संदर्भ)**	**100**	**4**	**40 घंटे**
9	**HIN 636 : आधुनिक भारतीय उपन्यास साहित्य**	**100**	**4**	**40 घंटे**
10	**HIN 637 : आधुनिक हिन्दी कविता**	**100**	**4**	**40 घंटे**
11	**HIN 638 : हिन्दी साहित्य की विविध विधाएँ**	**100**	**4**	**40 घंटे**

12	**HIN 639 : प्रयोजनमूलक हिन्दी : सर्जनात्मक लेखन एवं संचार प्रौद्योगिकी**	**100**	**4**	**40 घंटे**
13	**HIN 640 : लोक साहित्य: शोध की संभावनाएं**	**100**	**4**	**40 घंटे**

सत्र द्वितीय /तृतीय/ चतुर्थ डिजर्टेशन एवं मौखिकी					
14	**HIN 600** : **डिजर्टेशन एवं मौखिकी**	**डिजर्टेशन**	**08 क्रेडिट**	**डिजर्टेशन - 08 क्रेडिट**	
		मौखिकी	**04 क्रेडिट**	**मौखिकी - 02 क्रेडिट**	**अनुसंधान कार्य के आंतरिक मूल्यांकन के लिए – 2 क्रेडिट**

***ओपन ऐच्छिक पत्र :** शोध सलाहकार समिति (RAC) की सलाह पर हिंदी विभाग अथवा अन्य विभाग के शोधार्थी ओपन ऐच्छिक पत्र का चयन कर सकते हैं।

****ऐच्छिक पत्र :** इस पत्र का अध्ययन केवल हिन्दी विभाग के शोधार्थियों के लिए है। शोध सलाहकार समिति (RAC) की सलाह पर शोधार्थी ऐच्छिक पत्र का चयन कर सकते हैं।

एम.फिल. – प्रथम पत्र

अनिवार्य पत्र

HIN 611 : शोध प्रविधि

क्रेडिट : 04

पूर्णांक : 100

अंक विभाजन (सत्रांत परीक्षा/प्रायोगिक/आंतरिक परीक्षा) : [75/00/25]

क्रेडिट अवधि, मापांक एवं इकाइयां : 40 घंटे, 4 मापांक और 4 इकाई

उद्देश्य :

क. इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को अनुसंधान की प्रविधि से परिचित कराना है।

ख. अनुसंधान के सिद्धान्त, प्रक्रिया और क्षेत्र सर्वेक्षण के साथ ही इस इकाई में अनुसंधान से संबंधित विभिन्न प्रकारों की पद्धतियों की जानकारी देना है।

इकाई -1: अनुसंधानः अर्थ एवं स्वरूप ; साहित्यिक अनुसंधान, सामाजिक अनुसंधान एवं वैज्ञानिक अनुसन्धान ; अनुसंधान के प्रकार : स्वतन्त्र अनुसन्धान, संस्थागत अनुसन्धान, साहित्यिक शोध के प्रकार, तथ्यानुसन्धान और तथ्य परीक्षण, अनुसंधान और आलोचना, अनुसंधानकर्ता के गुण। व्याख्यान – 10

इकाई -2: अनुसंधान प्रविधियां : ऐतिहासिक अनुसंधान प्रविधि; समाजशास्त्रीय अनुसंधान प्रविधि; पाठानुसन्धान प्रविधि; भाषा वैज्ञानिक अनुसंधान प्रविधि; तुलनात्मक अनुसंधान प्रविधि; सर्वेक्षणात्मक अनुसंधान प्रविधि। व्याख्यान – 10

इकाई- 3: क्षेत्र सर्वेक्षण, प्रश्नावली निर्माण एवं अनुसूची, साक्षात्कार, पर्यवेक्षण, वैयक्तिक अध्ययन पद्धति (केस अध्ययन विधि), निदर्शन सिद्धांत, सारणीयन, विषयवस्तु विश्लेषण, एकांश लेखन एवं विश्लेषण, हस्तलेखों का संकलन और उनका उपयोग। व्याख्यान – 10

इकाई- 4: शोध के सोपान, शोध प्रबंध लेखन एवं प्रस्तुति : शोध प्रबन्ध का शीर्षक; परिकल्पना; रूपरेखा निर्माण; अध्यायीकरण; भूमिका लेखन; विषय सूची; विषय वस्तु ; संदर्भ लेखन ; उद्धरण : उपयोग और प्रस्तुति; संदर्भोल्लेख तथा पाद टिप्पणी; उद्देश्य, उपसंहार; परिशिष्ट ; आधार ग्रंथ; सन्दर्भ ग्रन्थ; सहायक ग्रन्थ; पत्र-पत्रिकाएं। व्याख्यान – 10

उपलब्धियां : इस पत्र के उपरांत शोधार्थी अनुसन्धान की मूल प्रक्रिया एवं कार्यविधि को समझ पाए एवं शोध के विभिन्न प्रकारों से अवगत हुए। साहित्य अनुसन्धान एवं आलोचना की स्थूल-सूक्ष्म दृष्टि विकसित करने में यह पत्र सहायक सिद्ध हुआ। साथ ही शोधार्थी अनुसन्धान की विभिन्न प्रविधियों की जानकारी और शोध के विभिन्न सोपानों तथा उनके प्रारूप निर्माण एवं लेखन की विधियों से वे भली-भाँति परिचित हो सके।

निर्देश: (i) प्रत्येक इकाई से दो-दो प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से एक का उत्तर लिखना होगा। 15 X 4 = 60

(ii) कुल पांच टिप्पणियां पूंछी जायेंगी जिनमें से तीन के उत्तर लिखने होंगे। प्रत्येक इकाई से कम से कम एक टिप्पणी अवश्य पूछी जायेगी। 5 X 3= 15

सहायक ग्रंथः

1. शोध प्रविधि - विनयमोहन शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
2. साहित्यिक अनुसंधान के प्रतिमान - एस. एन. गणेशन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
3. साहित्यिक अनुसंधान के प्रतिमान - देवराज उपाध्याय
4. शोध और सिद्धान्त - नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
5. हिन्दी अनुसंधान - विजयपाल सिंह, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
6. अनुसंधान की प्रक्रिया - सं. सावित्री सिन्हा तथा विजयेन्द्र स्नातक
7. अनुसंधान की प्रविधि और प्रक्रिया - राजेन्द्र मिश्र, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
8. अनुसंधान का स्वरूप - सं. सावित्री सिन्हा
9. शोध प्रविधि - रामगोपाल शर्मा दिनेश, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
10. पाठानुसंधान - डॉ. सियाराम तिवारी, विशाल पब्लिकेशन, पटना
11. शोध प्रविधि – रामकुमार खण्डेलवाल, चन्द्रकान्त रावत, जवाहर पब्लिकेशन, मथुरा
12. अनुसन्धान के विविध आयाम – रवीन्द्र कुमार जैन, शशिभूषण सिंहल राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
13. शोध प्रविधि – डॉ. हरिश्चन्द्र वर्मा, हरियाणा ग्रंथ अकादमी, पंचकुला
14. साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका - मैनेजर पाण्डेय
15. पाण्डुलिपि विज्ञान - रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'
16. The Literary Thesis - George Watson, Longman.
17. How to Write Assignments Research Topics, Dissertations and Thesis – V.H.Bedekar, Kanak Publications,New Delhi.
18. The Art of Literary Research - R. D Altik, Newyork.
19. Introduction to Research - T. Helway.
20. The Methodology of Field Investigation in Linguistics. - A. E. Kilerik.

****

एम.फिल. – द्वितीय पत्र

अनिवार्य पत्र

HIN 612 : शोध एवं प्रकाशन नैतिकता

क्रेडिट : 02

पूर्णांक : 50

अंक विभाजन (सत्रांत परीक्षा/प्रायोगिक/आंतरिक परीक्षा) : [20/20/10]

क्रेडिट अवधि, मापांक एवं इकाइयां : 30 घंटे, 2 मापांक और 3 इकाई

उद्देश्य :

क. इस पत्र का उद्देश्य शोधार्थियों को अनुसंधान एवं प्रकाशन संबंधी नैतिकता को समझाना है।

ख. इस पत्र के माध्यम से शोधार्थियों में शोध आलेख प्रकाशन, शोध प्रबंध प्रकाशन तथा साहित्यिक चोरी के संबंध में समझ विकसित कराना है ।

इकाई -1: **अ. दर्शन और नीतिशास्त्र**

क. दर्शन: परिभाषा, स्वरूप, क्षेत्र एवं प्रकार।

ख. नीतिशास्त्र : परिभाषा, नैतिकदर्शन तथा नैतिक निर्णय का स्वरूप।

आ. वैज्ञानिक आचरण :

क. विज्ञान एवं शोध के संबंध में नैतिकता : बौद्धिक ईमानदारी एवं शोध अखंडता।

ख. वैज्ञानिक दुराचार : मिथ्यायीकरण, छलरचना एवं साहित्यिक चोरी।

ग. प्रकाशन में बेमानी: डुप्लीकेट एवं ओवरलैपिंग प्रकाशन।

घ. चयनात्मक रिपोर्टिंग तथा आंकड़ों की अशुद्ध व्याख्या। व्याख्यान – 10

इकाई -2: **अ. प्रकाशन संबंधी नैतिकता :**

क. परिभाषा, स्वरूप एवं महत्व।

ख. श्रेष्ठ अभ्यास, मानक सेटिंग पहल एवं दिशानिर्देश : COPE, WAME इत्यादि।

ग. अभिरूचियों में अंतरविरोध

आ. प्रकाशन दुराचार

क. परिभाषा, संकल्पना एवं अनैतिक आचरणों से उत्पन्न समस्याएं।

ख. प्रकाशन नैतिकता का उल्लंघन, ग्रंथकारिता तथा योगदान।

ग. प्रकाशन दुराचार की पहचान, शिकायत एवं अपील।

घ. फर्जी (Predatory) प्रकाशक एवं पत्रिकाएं। व्याख्यान – 10

इकाई -3: **प्रायोगिक कार्य**

अ. ओपन एक्सेस पब्लिशिंग :

क. ओपन एक्सेस पब्लिकेशंस एण्ड इनिसियेटिब्स।

ख. प्रकाशक की कॉपीराइट की ऑनलाइन संसाधन SHERPA/RoMEO द्वारा जांच तथा स्वसंग्रह नीतियां।

ग. फर्जी प्रकाशकों की पहचान के लिए SPPU द्वारा विकसित सॉफ्टवेयर उपकरण।

घ. पत्रिका खोजक / पत्रिका सुझाव उपकरण जैसे – JANE, इल्जवेयर जर्नल फाईंडर, स्प्रिंगर जर्नल सजेस्टर आदि।

आ. प्रकाशन दुराचार :

क. विषय केंद्रित नैतिक मुद्दे, एफ.एफ.पी., ग्रंथकारिता, अभिरूचियों में अंतरविरोध, शिकायत एवं अपील : भारत और विदेश से उदाहरण एवं धोखा।

ख. सॉफ्टवेयर उपकरण : साहित्यिक चोरी के उपकरणों का उपयोग जैसे- टर्निटिन, उरकूण्ड तथा अन्य ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर।

ग. डेटाबेस: अनुक्रम डेटाबेस तथा उद्धरण डेटाबेस जैसे – वेब ऑफ साइंस, स्कॉपस आदि।

घ. रिसर्च मैट्रिक्स : जर्नल साइटेशन रिपोर्ट, एस.एन.आई.पी., एस.जे.आर., आई.पी.पी., साईट स्कोर, आदि के आधार पर पत्रिकाओं का इंपेक्ट फैक्टर ; मैट्रिक्स : एच-इंडेक्स, जी इंडेक्स, आई 10 इंडेक्स, एल्टमैट्रिक्स। व्याख्यान – 10

उपलब्धियां : इस पत्र के अध्ययन के उपरांत शोधार्थी शोध एवं प्रकाशन नैतिकता की मूलभूत बातों से परिचित हुए तथा इसके महत्त्व को जान सके। इस पत्र के तहत शोधार्थियों ने शोध की दार्शनिक अवधारणा तथा उसके नीतिशास्त्र सम्बन्धी प्रत्याख्यानों का सार्थक अवलोकन एवं तार्किक विवेचन किया। इस सन्दर्भ में शोधार्धी शोध हेतु आवश्यक वैज्ञानिक आचरण से परिचित हुए तथा प्रकाशन सम्बन्धी अनैतिक तथा दुराचारपूर्ण कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक ज्ञान प्राप्त किया। इस पत्र के प्रायोगिक कार्य द्वारा वे व्यावहारिक रूप से शोध में की जाने वाली गड़बड़ियों अथवा दुराचार के कारण प्रकाशन नैतिकता की दृष्टि से उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों से अवगत हो पाए।

निर्देश: (i) प्रत्येक इकाई से दो-दो प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से किसी एक का उत्तर लिखना होगा। 10 X 2 = 20

(ii) 20 (बीस) अंक की प्रायोगिक परीक्षा होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. Beall, J. (2012). Predatory Publishers are corrupting open access. Nature, 489 (7415), 179-179. https://doi.org/10.1038/489179a
2. Bird, A. (2006). Philosophy of Science. Routledge.
3. Indian National Science Academy (INSA), Ethics in Since, Research and Governance (2019), ISBN_ 978-81-939482-1-7.http://www.insaindia.res.in/pdf/Ethics_Books.pdf
4. Maclntyre, Alasdair (1967), A Short History of Ethics, London.
5. National Academy of Sciences, National Academy of Engineering and Institute of Medicine. (2009). On Being a Scientist : A Guide to Responsible Conduct in Research: Third Edition, National Academic Press.
6. P. Chaddah, (2018) Ethics in Competitive Research: Do not get scooped; do not get plagiarized, ISBN: 978-9387480865
7. Resnik, D.B. (2011). What is ethics in research & why is it important. National Institute of Environmental Health Sciences, 1-10. Retrieved from https://www.niehs.nih.gov/research/resources/bioethics/whatis/index.cfm

एम.फिल. – तृतीय पत्र
ऐच्छिक पत्र (ओपन)
HIN 621 (क)
तुलनात्मक भारतीय साहित्य

क्रेडिट : 02
पूर्णांक : 50
अंक विभाजन (सत्रांत परीक्षा/प्रायोगिक/आंतरिक परीक्षा) : [20/20/10]
क्रेडिट अवधि एवं इकाइयां : 30 घंटे और 3 इकाई

उद्देश्य: इस पत्र में शोधार्थियों को तुलनात्मक भारतीय साहित्य की जानकारी दी जाएगी । भारतीय तुलनात्मक साहित्य की अवधारणा, भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ तथा तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद की भूमिका से विद्यार्थियों को परिचित कराना इस पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

इकाई 1 तुलनात्मक साहित्य की अवधारणा, तुलनात्मक साहित्य का भारतीय संदर्भः तुलनात्मक अध्ययन की समस्याएँ, तुलना के आधार-वस्तु, विधा, युग और साहित्यिक आन्दोलन। तुलनात्मक भारतीय साहित्य के इतिहास की संकल्पना। व्याख्यान – 10

इकाई 2 तुलनात्मक साहित्य और अनुवाद, अनुवाद की भारतीय परम्परा, बहुभाषिक समाज में अनुवाद का महत्व, राष्ट्रीय एकता और साहित्यिक आदान-प्रदान में अनुवाद की भूमिका। व्याख्यान – 10

इकाई 3 प्रायोगिक कार्य
निम्नलिखित में से किसी एक का तुलनात्मक अध्ययन

क. आधे-अधूरे (मोहन राकेश) और हयवदन (गिरीश कर्नाड)
ख. माटी माटी अरकारी (अश्विनी कुमार 'पंकज') और मतुराअ कहनि (जोसेफ ओडेय)
ग. गोदान (प्रेमचंद) और छै बीघा जमीन (फकीरमोहन सेनापति)
घ. किसका है यह देश (नजरुल इस्लाम) और किस्सा-ए-जनतंत्र (सुदामा पाण्डेय 'धूमिल')
ङ. आईना (येशे दोरजी थोंगछी) तथा कोसी का घटवार (शेखर जोशी) व्याख्यान – 10

उपलब्धियां : इस पत्र के माध्यम से शोधार्धी भारतीय साहित्य को केन्द्र में रखते हुए तुलनात्मक अध्ययन की शोध-प्रविधि से अवगत हुए। भारतीय साहित्य के इतिहास से जुड़ी समस्याओं और कालानुक्रम निर्धारण की प्रणालियों के बारे में ज्ञान प्राप्त किया। शोधार्थियों ने तुलनात्मक अध्ययन की प्रक्रिया में अनुवाद की भूमिका एवं महत्त्व के व्यावहारिक पहलुओं से भलीभाँति परिचित हुए

निर्देश: (i) प्रत्येक इकाई से दो-दो प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से किसी एक का उत्तर लिखना होगा। 10 X 2 = 20

(ii) 20 (बीस) अंक की प्रायोगिक परीक्षा होगी।

सहायक ग्रंथः

1. तुलनात्मक साहित्य की भूमिका - इन्द्रनाथ चौधुरी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
2. तुलनात्मक साहित्यः भारतीय परिप्रेक्ष्य - इन्द्रनाथ चौधुरी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
3. तुलनात्मक साहित्य - डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
4. भारतीय साहित्यः स्थापनाएँ और प्रस्तावनाएँ - के. सच्चिदान्दन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5. भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ - रामविलास शर्मा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
6. मराठी साहित्यः विविध परिदृश्य - चन्द्रकान्त वांदिवडेकर, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
7. भारतीय साहित्य - डॉ. नगेन्द्र , प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
8. तुलनात्मक अध्ययनः स्वरूप और समस्याएँ - सं. डॉ. म. ह, राजूरकर, डॉ. राजमल बोरा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
9. भाषा और समाज - डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

****

एम.फिल. – तृतीय पत्र
ऐच्छिक पत्र (ओपन)
HIN 621 (ख)
हिंदी साहित्य : कविता कहानी एवं उपन्यास

क्रेडिट : 02
पूर्णांक : 50
अंक विभाजन (सत्रांत परीक्षा/प्रायोगिक/आंतरिक परीक्षा) : [20/20/10]
क्रेडिट अवधि एवं इकाइयां : 30 घंटे और 3 इकाई

उद्देश्य: इस पत्र द्वारा शोधार्थी हिन्दी साहित्य के स्वरूप से परिचित होंगे तथा हिंदी लोकवृत्त की रचनात्मकता को वे हिंदी कविता, कहानी एवं उपन्यास के संदर्भ में जान समझ सकेंगे। साथ ही हिन्दी साहित्य के असल निहितार्थ और संवेदनात्मक दृष्टि से वे इस पत्र के माध्यम से भली-भांति अवगत हो सकेंगे।

इकाई 1: प्रतिनिधि कविताएं

क. कबीर
ख. तुलसीदास
ग. महादेवी वर्मा
घ. चन्द्रकांत देवताले
ङ. मंगलेश डबराल व्याख्यान – 10

इकाई 2: प्रतिनिधि कहानियां एवं प्रतिनिधि उपन्यास

अ. प्रतिनिधि कहानियां

क. पूस की रात – प्रेमचंद
ख. पाजेब – जैनेन्द्र
ग. टोबा टेक सिंह – सआदत हसन 'मंटो'
घ. जिंदगी के थपेड़े – विष्णु प्रभाकर
ङ. सजा – मन्नू भंडारी

आ. प्रतिनिधि उपन्यास

रंगभूमि - प्रेमचंद व्याख्यान – 10

इकाई 3: प्रायोगिक

प्रतिनिधि साहित्यकारों के साहित्य की विवेचना

क. कविताएँ
ख. कहानियाँ
ग. उपन्यास व्याख्यान – 10

उपलब्धियां : इस पत्र के माध्यम से शोधार्थी हिन्दी रचनाशील-संसार के मुख्य साहित्यकारों एवं उनकी रचनाओं से अवगत हुए। हिन्दी लोकवृत्त में कविता, कहानी एवं उपन्यास के प्रतिनिधि लेखक अथवा कवि एवं कवयित्री की रचनाओं का स्थूल-सूक्ष्म अध्ययन-विश्लेषण किया और यह जान सके कि हिन्दी का रचना संसार अपनी विभिन्न विधाओं में कितना विपुल तथा समृद्ध है।

निर्देश: (i) प्रत्येक इकाई से दो-दो प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से किसी एक का उत्तर लिखना होगा। 10 X 2 = 20

(ii) 20 (बीस) अंक की प्रायोगिक परीक्षा होगी।

संदर्भ ग्रंथ -

1. कबीर - हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
2. कबीर बीजक की भाषा - डॉ. शुकदेव सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
3. मध्यकालीन धर्म साधना - डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, साहित्य भवन, इलाहाबाद
4. गोस्वामी तुलसीदास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
5. तुलसी-साहित्य का आधुनिक संदर्भ – डॉ. हरीश कुमार शर्मा, साहित्य सहकार प्रकाशन, दिल्ली
6. महादेवी का काव्य सौष्ठव – कुमार विमल
7. महादेवी – इंद्रनाथ मदान
8. महादेवी का नया मूल्यांकन – डॉ. गणपति चंद्र गुप्त
9. समकालीन हिन्दी कविता - डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
10. सदी के अन्त में कविता - सं. डॉ. विजय कुमार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
11. समकालीन कविता का यथार्थ - डॉ. परमानन्द श्रीवास्तव, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
12. कवियों की पृथ्वी - अरविन्द त्रिपाठी, आधार प्रकाशन, पंचकूला
13. एक कवि की नोटबुक - राजेश जोशी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
14. हिन्दी कहानी का विकास - मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली
15. हिन्दी कहानी का इतिहास- भाग I, II, III और IV – गोपाल राय, राजकमल , दिल्ली

एम.फिल. – चतुर्थ पत्र

ऐच्छिक पत्र

HIN – 631

हिन्दी साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि

क्रेडिट- 04

पूर्णांक- 100

अंक विभाजन (सत्रांत परीक्षा/प्रायोगिक/आंतरिक परीक्षा) : {75/00/25}

क्रेडिट अवधि एवं इकाइयां: 40 घंटे और 4 इकाई

उद्देश्य

क. हिन्दी साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि को समझना

ख. परंपरा और आधुनिकता के अन्तस्संबंधों को समझना

ग. हिन्दी साहित्य में संबद्ध विशिष्ट मतवादों का अनुशीलन करना

घ. साहित्य का अन्तर्विषयक अध्ययन करना

इकाई – 1 : विचारधारा और साहित्य, मध्ययुगीन बोध का स्वरूप, विभिन्न धर्म साधनाएँ और वैष्णव धर्मान्दोलन, मध्ययुगीन बोध और आधुनिक बोध में साम्य-वैषम्य, आधुनिकता बोध और औद्योगिक संस्कृति, राष्ट्रीयता और अन्तरराष्ट्रीयता, पुनर्जागरण, पुरुत्थान और हिन्दी लोक जागरण व्याख्यान – 10

इकाई- 2: परंपरा और आधुनिकता, राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन, भारत की सांविधानिक व्यवस्था-लोकतंत्र, समाजवाद, पंथनिरपेक्षता, दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, जनजातीय विमर्श, आंचलिकता और महानगर बोध व्याख्यान – 10

इकाई- 3 : हिन्दी साहित्य में संबद्ध विशिष्ट मतवाद - अध्यात्मवाद, गांधीवाद, मार्क्सवाद, धर्म, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, अन्तश्चेतनावाद, उत्तर आधुनिकतावाद व्याख्यान – 10

इकाई- 4: साहित्य का अन्तर्विषयक अध्ययन - साहित्य का समाजशास्त्र, इतिहास-दर्शन, मनोवैज्ञानिक अध्ययन, सांस्कृतिक अध्ययन, भाषा वैज्ञानिक विवेचन, भाषा प्रोद्योगिकी, साहित्य का वैज्ञानिक बोध व्याख्यान – 10

उपलब्धियां : इस पत्र को पढ़ने के पश्चात् शोधार्थी हिन्दी साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि से परिचित हो चुके होंगे। परंपरा और आधुनिकता के अन्तस्संबंधों की समझ विकसित हो चुकी होगी। हिंदी साहित्य में संबद्ध विशिष्ट मतवादों से परिचित हो चुके होंगे। छात्रों को साहित्य का अन्तर्विषयक अध्ययन करने में सुविधा होगी।

निर्देश:

(i) प्रत्येक इकाई से दो-दो प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से किसी एक का उत्तर लिखना होगा। 15x4= 60

(ii) कुल पांच टिप्पणियां पूछी जायेंगी जिनमें से तीन के उत्तर लिखने होंगे। प्रत्येक इकाई से कम से कम एक टिप्पणी अवश्य पूछी जायेगी। 5x3= 15

संदर्भ ग्रंथ :

1. साहित्य और इतिहास दृष्टि – मैनेजर पाण्डेय
2. साहित्य और इतिहास-दर्शन - नलिन विलोचन शर्मा
3. हिन्दी साहित्य कोश भाग 1 पारिभाषिक शब्दावली
4. हिन्दी साहित्य ज्ञानकोश
5. समकालीन हिन्दी साहित्य विविध विमर्श – श्रीराम शर्मा
6. आधुनिक हिन्दी कविता में विचार- बलदेव वंशी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
7. भारतेन्दु और भारतीय नवजागरण – शंभुनाथ
8. विचारधारा और साहित्य – सं. राजकुमार शर्मा, राज पब्लिशिंग हाउस, 1979 दिल्ली
9. आस्था और सौन्दर्य – रामविलास शर्मा, नई दिल्ली, 1990
10. मार्क्स और पिछड़े हुए समाज – नई दिल्ली, 1986
11. साहित्य और विचारधारा - कमला प्रसाद, इलाहाबाद, 1984
12. साहित्य के विविध आयाम – सुधेश, दिल्ली, 1983
13. संरचनात्मक शैली विज्ञान – रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव
14. साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका – मैनेजर पाण्डेय
15. साहित्य का समाजशास्त्र – सं. डॉ. निर्मला जैन
16. संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद एवं प्राच्य काव्यशास्त्र – गोपीचंद नारंग
17. साहित्य का समाजशास्त्र – डॉ. नगेन्द्र
18. उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्श – सुधीश पचौरी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
19. स्त्रीवादी विमर्श : समाज और साहित्य - क्षमा शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
20. गांधी, नवसर्जन की अनिवार्यता : काका साहेब कालेलकर, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली
21. परम्परा का मूल्यांकन – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
22. स्त्रीवादी साहित्य विमर्श – जगदीश्वर चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली।
23. अस्तित्ववाद – योगेन्द्र शाही, द मैकमिलन, दिल्ली ।
24. मनोविश्लेषण - सिंगमंड फ्रायड, राजकमल एवं सन्स दिल्ली
25. मध्यकालीन बोध का स्वरूप – हजारी प्रसाद द्विवेदी
26. साहित्य का समाजशास्त्र और रूपवाद – बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

एम.फिल. – चतुर्थ पत्र

ऐच्छिक पत्र

HIN 632

भक्तिकालीन साहित्य और शोध की संभावनाएं

क्रेडिट : 04

पूर्णांक : 100

अंक विभाजन (सत्रांत परीक्षा/प्रायोगिक/आंतरिक परीक्षा) : [75/00/25]

क्रेडिट अवधि, मापांक एवं इकाइयां : 40 घंटे, 4 मापांक और 4 इकाई

उद्देश्य :

इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारत में भक्ति आन्दोलन के व्यापक भारतीय स्वरूप एवं भूमिका से अवगत कराना है।

इकाई -1: भक्ति के उदय की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, भागवत भक्ति का स्वरूप, नारद-भक्ति सूत्र, आलवार और नायनार संत, प्रमुख वैष्णव आचार्यों के सम्प्रदाय और दर्शन, शैव सम्प्रदाय; दार्शनिक सिद्धांत। व्याख्यान – 10

इकाई -2: महाराष्ट्र के संत कवि और वारकरी सम्प्रदाय; कबीर, नानक, रैदास, दादू, मलूकदास और उत्तर भारत की निर्गुण भक्ति परम्परा,शंकरदेव-माधवदेव और असम का भक्ति आन्दोलन, लल्लद्येद और कश्मीरी भक्ति, कृष्ण भक्ति की उड़िया और गुजराती धाराएं। व्याख्यान – 10

इकाई - 3: भक्ति आन्दोलन का अखिल भारतीय परिप्रेक्ष्य, भक्ति आन्दोलन और लोक जागरण, भक्ति आन्दोलन का सामाजिक आधार, भक्तिकालीन काव्य भाषा। व्याख्यान – 10

इकाई - 4 भक्तिकाल और शोध की संभावनाएं : विभिन्न धाराओं के कवियों के वैचारिक आधार, विभिन्न सम्प्रदायों में चिंतन के धरातल पर तुलनात्मक अध्ययन, विभिन्न विमर्शों के आधार पर भक्तिकालीन साहित्य का अध्ययन। व्याख्यान – 10

उपलब्धियां : इस पत्र के माध्यम से शोधार्थी भारतीय साहित्य में भक्तिकाल की अवधारणा एवं इस युग की स्वर्णिम परम्परा के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सके। भक्ति आन्दोलन के अखिल भारतीय स्वरूप से परिचित हुए तथा प्रमुख संत कवियों एवं विभिन्न सम्प्रदायों की जानकारी प्राप्त की। साथ ही शोधार्थी भक्तिकाल में शोध की संभावनाओं के बारे में जान सके तथा इस आधार पर समकालीन विमर्शों में भक्तिकालीन प्रदेय एवं उसकी उपादेयता से अवगत हुए।

निर्देश:

(i) प्रत्येक इकाई से दो-दो प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से किसी एक का उत्तर लिखना होगा। 15x4= 60

(ii) कुल पांच टिप्पणियां पूछी जायेंगी जिनमें से तीन के उत्तर लिखने होंगे। प्रत्येक इकाई से कम से कम एक टिप्पणी अवश्य पूछी जायेगी। 5x3= 15

सहायक ग्रंथ:-

1. नाथ सम्प्रदाय - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, नैवेद्य निकेतन, वाराणसी।
2. हिन्दी साहित्य में निर्गुण सम्प्रदाय – डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल।
3. उत्तर भारत की संत परंपरा – परशुराम चतुर्वेदी, किताब महल, प्रयाग।
4. मध्ययुगीन निर्गुण चेतना – डॉ. धर्मपाल मैनी, लोकभारती, इलाहाबाद।
5. संतों के धार्मिक विश्वास - डॉ. धर्मपाल मैनी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
6. रैदास वाणी – डॉ. शुकदेव सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
7. कबीर - हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन।
8. दादू पंथ : साहित्य और समाज दर्शन - डॉ. ओकेन लेगो, यश पब्लिकेशन, दिल्ली।
9. दादू दयाल – परशुराम चतुर्वेदी
10. संत साहित्य की समझ - नन्द किशोर पाण्डेय, यश पब्लिकेशन, दिल्ली।
11. सन्त रज्जब - नन्द किशोर पाण्डेय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
12. रज्जब - नन्द किशोर पाण्डेय, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
13. जयदेव - आनन्द कुशवाहा, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
14. जायसी - परमानन्द श्रीवास्तव, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
15. तुकाराम - भालचन्द्र नेमाडे, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
16. सूरदास - आचर्य रामचन्द्र शुक्ल, ना. प. सभा, काशी।
17. सूर और उनका साहित्य - डॉ. हरवंश लाल शर्मा, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़।
18. सूरदास - नंददुलारे वाजपेयी।
19. गोस्वामी तुलसीदास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
20. तुलसी और उनका युग - डॉ. राजपति दीक्षित, ज्ञानमंडल, काशी।
21. तुलसी-साहित्य का आधुनिक सन्दर्भ - डॉ. हरीशकुमार शर्मा, साहित्य सहकार प्रकाशन,दिल्ली।
22. रामकथा का विकास - कामिल बुल्के, हिन्दी परिषद्, प्रयाग।
23. भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य - मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
24. मीरा का काव्य - विश्वनाथ त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
25. मीराबाई - डॉ. सी.एल. प्रभात
26. रामचरितमनस में नारी - डॉ. सुशील कुमार शर्मा, साहित्य सहकार प्रकाशन, दिल्ली।
27. मीराबाई - ब्रजेन्द्र कुमार सिंहल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
28. नंददास - व्यास मणि त्रिपाठी, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली .

एम.फिल. – चतुर्थ पत्र

ऐच्छिक पत्र

HIN – 633

भारतीय रंगमंच और नाटक

क्रेडिट- 04

पूर्णांक- 100

अंक विभाजन (सत्रांत परीक्षा/प्रयोगिक/आंतरिक परीक्षा) : {75/00/25}

क्रेडिट अवधि एवं इकाइयां: 40 घंटे और 4 इकाई

उद्देश्य:

क. रंगमंच के इतिहास से परिचय

ख. संस्कृत नाट्य-साहित्य के अवदान का आकलन

ग. लोक रंगमंच एवं नाटक की विवेचना

घ. प्रमुख भारतीय नाटकों का अध्ययन

इकाई 1: **रंगमंच का प्रादुर्भाव एवं विकास-क्रम**

रंग शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ, रंगमंच का स्वरूप एवं तत्व, ऐतिहासिक साक्ष्य- सिंधु घाटी, सीता बेंगरा एवं जोगी माला की गुफाएँ, ऋगवेद, नाट्यशस्त्र, रामायण, महाभारत। व्याख्यान – 10

इकाई 2: **रंगमंच का शास्त्रीय स्वरूप** व्याख्यान – 10

शास्त्रीय रंगमंच का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप एवं परंपरा, संस्कृत नाटकों के तत्व, प्रमुख संस्कृत नाटककार।

इकाई 3: **रंगमंच का लोक स्वरूप (लोक रंगमंच)**

लोक रंगमंच का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप एव तत्व, लोक रंगमंच का उद्भव, प्रमुख लोकनाटक- अंकिया नाट, रामलीला, भवाई, यक्षगान, माँच, नौटंकी, करियला, कृष्णा अट्टम, बहरूपिया। व्याख्यान – 10

इकाई 4: **भारतीय नाटक परंपरा (किन्हीं दो नाटकों का अध्ययन)**

मृच्छकट्टिकम, अजातशत्रु, नागमंडल, एवम् इंद्रजीत, ख़ामोश अदालत जारी है। व्याख्यान – 10

उपलब्धियां : इस पत्र के माध्यम से शोधार्थी भारतीय रंगमंच की ऐतिहासिक परम्परा एवं मंचन-विधि से अवगत हुए। उन्होंने नाटक के सन्दर्भ में संस्कृत नाटकों से लेकर हिन्दी नाटकों की समकालीन परम्परा के बारे में महत्त्वपूर्ण

जानकारी प्राप्त की। इसी क्रम में उन्होंने शास्त्रीय नाट्य परम्परा एवं आधुनिक नाट्य मंचन कला से भलीभाँति परिचित हुए। भारतीय नाट्य परम्परा के अनुशीलन हेतु शोधार्थी ने प्रतिनिधि नाटकों का गंभीरतापूर्वक अध्ययन-विश्लेषण कर पाने में सफल हुए।

निर्देश:

(i) प्रत्येक इकाई से दो-दो प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से किसी एक का उत्तर लिखना होगा। 15x4= 60

(ii) कुल पांच टिप्पणियां पूछी जायेंगी जिनमें से तीन के उत्तर लिखने होंगे। प्रत्येक इकाई से कम से कम एक टिप्पणी अवश्य पूछी जायेगी। 5x3= 15

संदर्भ ग्रंथ :

1. आधुनिक भारतीय रंगलोक- जयदेव तनेजा, भारतीय ज्ञानपीठ
2. भारतीय तथा पाश्चात्य रंगमंच- सीताराम चतुर्वेदी, हिंदी समिति सूचना विभाग, लखनऊ
3. रंगदर्शन; नैमिचंद्र जैन - अक्षर प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली
4. नाटक के रंगमंचीय प्रतिमान - डॉ. वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी, जगतराम एण्ड सन्स
5. रंग परंपरा भारतीय नाट्य में निरंतरता और बदलाव - नैमिचंद्र जैन, वाणी प्रकाशन
6. असमिया साहित्य की रूपरेखा - विरंचिकुमार बरुआ, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति गुवाहाटी
7. दर्शन-प्रदर्शन - देवेंद्र राज अंकुर, राजकमल प्रकाशन
8. नाट्यकला मीमांसा - डॉ. गोविंद दास, सूचना तथा प्रकाशन संचानालय, मध्य प्रदेश
9. परंपराशील नाट्य - जगदीश चंद्र माथुर, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
10. रंगभाषा -गिरीश रस्तोगी, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली

एम.फिल. – चतुर्थ पत्र
ऐच्छिक पत्र
HIN – 634
दलित साहित्य अध्ययन

क्रेडिट- 04
पूर्णांक- 100
अंक विभाजन (सत्रांत परीक्षा/प्रायोगिक/आंतरिक परीक्षा) : {75/00/25}
क्रेडिट अवधि एवं इकाइयां: 40 घंटे और चार इकाई

उद्देश्य- इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को अस्मितामूलक विमर्श के एक प्रमुख स्तम्भ दलित विमर्श से परिचित कराना और उसका अध्ययन करना है। इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को दलित साहित्य के सैद्धांतिक पक्ष का अध्ययन कराया जाएगा। इसके साथ ही कुछ रचनाओं के माध्यम से दलित जीवन की समस्याओं और चुनौतियों से भी परिचित कराया जाएगा।

इकाई 1: दलित साहित्य की अवधारणा, दलित साहित्य के सरोकार, भारतीय दलित साहित्य की सैद्धांतिकी- क- बौद्ध धम्म-दर्शन, ख- संत साहित्य, ग- अंबेडकरवाद, घ- वर्ण-जाति विरोधी आंदोलन, ङ- जोतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले का योगदान। दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, दलित स्त्री विमर्श, दलित साहित्य आंदोलन का संक्षिप्त इतिहास, हिन्दी दलित आलोचना। व्याख्यान – 10

इकाई 2 : निम्नलिखित में से किसी एक आत्मकथा और एक जीवनी का अध्ययन-

क. महानायक बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर (जीवनी)- मोहनदास नैमिशराय
ख. भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले (जीवनी)- प्रोफेसर सुभाष चन्द्र
ग. मुर्दहिया और मणिकर्णिका (आत्मकथा) - डॉ. तुलसीराम
घ. अपने-अपने पिंजरे (तीनों खंड)- मोहनदास नैमिशराय व्याख्यान – 10

इकाई 3 : निम्नलिखित में से किन्हीं तीन कविताओं का अध्ययन-

क. श्यौराज सिंह बेचैन- अंधेरा चीरने की शक्ति
ख. कंवल भारती - तब तुम्हारी निष्ठा क्या होती?
ग. सुशीला टाकभौरे- तुमने उसे कब पहचाना
घ. ओमप्रकाश वाल्मीकि- कभी सोचा है
ङ. हेमलता महीश्वर- मैं कौन?
च. मलखान सिंह- सुनो ब्राह्मण
छ. रजतरानी मीनू- स्त्री

ज. पूनम तुषामड़- एक चाह

झ. असंग घोष- मुझे ही..... व्याख्यान – 10

इकाई 4 : निम्नलिखित में से किन्हीं तीन कहानियों का अध्ययन-

क. कौशल पँवार- दिहाड़ी

ख. ओमप्रकाश वाल्मीकि- भय

ग. जय प्रकाश कर्दम- खरोंच

घ. रत्न कुमार सांभरिया- डंक

ङ. संदीप मील- थू-थू

च. सूरजपाल चौहान- बस्ती के लोग

छ. अजय नावरिया- शार्प कर्व

ज. सुशीला टाकभौरे- सूरज के आसपास

झ. मोहनदास नैमिशराय- दर्द व्याख्यान – 10

उपलब्धियां : इस पत्र के माध्यम से शोधार्थी समाज की वर्गीय संरचना से अवगत हुए तथा हाल के वर्षों में उभरे अस्मितामूलक स्वरों का भलीभाँति परिचय प्राप्त किया। शोधार्थियों ने दलित समाज की अवधारणा एवं उनके साहित्य विषयक वैचारिकी एवं सैद्धान्तिकी से अवगत हुए। इस पत्र के माध्यम से शोधार्थी प्रतिनिधि दलित आत्मकथा एवं जीवनी के अतिरिक्त चुनिंदा कविताओं एवं कहानियों का अध्ययन एवं अनुशीलन करने में सफल हुए।

निर्देश:

(i) प्रत्येक इकाई से दो-दो प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से किसी एक का उत्तर लिखना होगा। 15x4= 60

(ii) कुल पांच टिप्पणियां पूछी जायेंगी जिनमें से तीन के उत्तर लिखने होंगे। प्रत्येक इकाई से कम से कम एक टिप्पणी अवश्य पूछी जायेगी। 5x3= 15

सहायक ग्रंथ-

1. पच्चीस बरस पच्चीस कहानियाँ- शृंखला संपादक- राजेंद्र यादव, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
2. भारतीय दलित साहित्य: परिप्रेक्ष्य- फुन्नी सिंह, कमला प्रसाद, राजेंद्र शर्मा (संपादक), वाणी प्रकाशन, दिल्ली
3. दलित निर्वाचित कविताएं- कंवल भारती, साहित्य उपक्रम
4. सलाम- ओमप्रकाश वाल्मीकि, राधाकृष्ण पेपरबैक्स
5. यथास्थिति से टकराते हुए: दलित स्त्री जीवन से जुड़ी कविताएं – अनीता भारती, बजरंग बिहारी तिवारी (संपादक)
6. यथास्थिति से टकराते हुए: दलित स्त्री जीवन से जुड़ी कहानियाँ- अनीता भारती, बजरंग बिहारी तिवारी (संपादक)
7. महात्मा ज्योतिबा फुले रचनावली (1,2)- अनु. एवं सं. – डॉ. एल जी मेश्राम विमलकीर्ति

8. डॉ. अम्बेडकर – संपूर्ण वाङ्मय, भारत सरकार, कल्याण मंत्रालय, दिल्ली
9. काशीराम – चमचा युग (अनु.एस. एस. गौतम)
10. आचार्य आनन्द झा – चावार्क दर्शन
11. रामशरण शर्मा – शूद्रों का प्राचीन इतिहास
12. मधु लिमये – अम्बेडकर एक चिंतन (अनु. मस्तराम कपूर)
13. राजकिशोर (सं.)- हरिजन से दलित
14. ओमप्रकाश वाल्मिकी – दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - मुख्यधारा और दलित साहित्य
15. शरण कुमार लिंबाले – दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र
16. कंवल भारती – दलित विमर्श की भूमिका
    दलित साहित्य की अवधारणा
17. डॉ. चन्द्र कुमार वरठे – दलित साहित्य आंदोलन
18. अजय कुमार (सं.) – दलित पैंथर आंदोलन
19. डॉ. विमल थोरात – मराठी दलित कविता और साठोत्तरी हिन्दी कविता में सामाजिक और राजनीतिक चेतना, दलित साहित्य की स्त्रीवादी स्वर
20. डॉ. विमल थोरात, डॉ. सूरज बडत्य (सं) – दलित कविता का विद्रोही स्वर
21. डॉ. तेजसिंह – आज का दलित साहित्य
22. चमनलाल (सं.) – दलित साहित्य और सामाजिक न्याय
23. पुरुषोत्तम अग्रवाल – संस्कृति : वर्चस्व और प्रतिरोध
24. श्यौराज सिंह 'बेचैन' – चिंतन की परंपरा और दलित साहित्य
25. रजतरानी मीनू – नवें दशक की हिन्दी दलित कविता
26. रमणिका गुप्ता – स्त्री नैतिकता का तालीबानीकरण
    (सं.) – दलित चेतना सोच
27. डॉ. धर्मवीर – कबीर के आलोचक
28. अभय कुमार दुबे (सं) – आधुनिकता के आईने में दलित
29. शिवबाबू मिश्र – जूठन एक विमर्श
30. माता प्रसाद – (.सं)लोकगीतों में वेदना और विद्रोह के स्वर

एम.फिल. – चतुर्थ पत्र
ऐच्छिक पत्र
HIN – 635
आदिवासी साहित्य अध्ययन (भारतीय संदर्भ)

क्रेडिट- 04
पूर्णांक- 100
अंक विभाजन (सत्रांत परीक्षा/प्रायोगिक/आंतरिक परीक्षा) : {75/00/25}
क्रेडिट अवधि एवं इकाइयां: 40 घंटे और चार इकाई

उद्देश्य- इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारत के आदिवासी समुदायों पर लिखे जा रहे साहित्य से परिचित कराना और उसका अध्ययन करना है। इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को आदिवासी साहित्य के सैद्धांतिक पक्ष के साथ-साथ कुछ रचनाओं के माध्यम से आदिवासी समाजों की सांस्कृतिक विशेषता, उनका जन-जीवन, समस्याएँ और चुनौतियों के बारे में अवगत कराया जाएगा।

इकाई 1 : आदिवासी साहित्य का आशय और अवधारणा, आदिवासी समाजों का वैशिष्ट्य और उनका बदलता स्वरूप, आदिवासी साहित्य के इतिहास का संक्षिप्त परिचय, आदिवासी चिंतन, दर्शन, विश्वदृष्टि और वैचारिकता। समकालीन आदिवासी प्रश्न, आदिवासी साहित्य विमर्श और आलोचना, आदिवासी अस्मिता और अस्तित्व का प्रश्न, आदिवासी साहित्य की मौखिक परंपरा, आदिवासी संघर्ष और आंदोलन। व्याख्यान – 10

इकाई 2 : निम्नलिखित में से किन्हीं दो उपन्यासों का अध्ययन-

क. अमृत संतान- गोपीनाथ महंती
ख. जंगल के दावेदार- महाश्वेता देवी
ग. मातमुर जामोह- जुमसी सिराम
घ. धूणी तपे तीर- हरिराम मीणा
ङ. सोन पहाड़ी - पीटर पॉल एक्का व्याख्यान – 10

इकाई 3 : निम्नलिखित में से किन्हीं चार कहानियों का अध्ययन-

क. बिरूआर गमछा - रोज केरकेट्टा
ख. सलगी,जुगनू और अम्बा गाछ-एलिस एक्का
ग. भूतबेचवा- रणेन्द्र
घ. सड़क की यात्रा- ममंग दई
ङ. आईना- येशे दोरजी थोंगछी

च. जंगल की ललकार- वाल्टर भेंगरा 'तरुण'
छ. जोड़ा हारिल की रूपकथा- राकेश कुमार सिंह
ज. पेनाल्टी कार्नर - अश्विनी कुमार 'पंकज'
झ. खरगोशों का कष्ट - रामदयाल मुंडा
ञ. सोअबा- तेमसुला आओ
ट. मूसल- फ्रांसिस्का कुजूर
ठ. कोराईन डूबा- ज्योति लकड़ा व्याख्यान – 10

इकाई 4 : निम्नलिखित में से किन्हीं चार कविताओं का अध्ययन-

क. शरण - तारो सिंदिक
ख. कविताओं वाली नदी- वंदना टेटे
ग. पहाड़ और पहरेदार- जसिन्ता केरकेट्टा
घ. मेरा पुनर्जन्म नहीं होगा- अनुज लुगुन
ङ. चुड़का सोरेन से- निर्मला पुतुल
च. एक और जनी-शिकार- ग्रेस कुजूर
छ. खत्म होती हुई एक नस्ल- हरिराम मीणा
ज. विकास का दर्द- राम दयाल मुंडा
झ. बिन मुर्गे के झारखंड में सुबह- महादेव टोप्पो व्याख्यान – 10

उपलब्धियां : इस पत्र के अध्ययन के उपरांत शोधार्थी आदिवासी रचनाशीलता एवं साहित्य को आदिवासीजन की सामाजिक-सांस्कृतिक अवस्था एवं स्थिति में भलीभाँति समझ पाते हैं। इसके साथ ही शोधार्थी आदिवासी साहित्य अध्ययन की प्रकृति का आलोचनात्मक ढंग से जानकारी प्राप्त करते हैं और उनके संघर्ष एवं आन्दोलन से अवगत होते हैं। इस पत्र में शोधार्थी आदिवासी साहित्य अध्ययन के अन्तर्गत महत्त्वपूर्ण साहित्यिक उपन्यासों, कहानियों एवं कविताओं के माध्यम से आदिवासी चेतना की निर्मिति एवं विमर्शात्मक मूल्यों को जान-समझ सके।

निर्देश:

(i) प्रत्येक इकाई से दो-दो प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से किसी एक का उत्तर लिखना होगा। 15x4= 60
(ii) कुल पांच टिप्पणियां पूछी जायेंगी जिनमें से तीन के उत्तर लिखने होंगे। प्रत्येक इकाई से कम से कम एक टिप्पणी अवश्य पूछी जायेगी। 5x3= 15

सहायक ग्रंथ-

1. पलाश के फूल, सोन पहाड़ी- पीटर पॉल एक्का, सत्यभारती प्रकाशन, रांची
2. स्त्री महागाथा की महज एक पंक्ति- रोज केरकेट्टा, प्यारा केरकेट्टा फ़ाउंडेशन, रांची
3. क्रोन जोगा- वंदना टेटे, प्यारा केरकेट्टा फ़ाउंडेशन, रांची
4. आदिवासी साहित्य: परंपरा और प्रयोजन- वंदना टेटे, प्यारा केरकेट्टा फ़ाउंडेशन, रांची
5. एलिस एक्का की कहानियाँ- वंदना टेटे (संपादक), राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
6. आदि धरम- रामदयाल मुंडा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
7. आदिवासी अस्तित्व और झारखंडी अस्मिता के सवाल- रामदयाल मुंडा, प्रकाशन संस्थान
8. मानव और संस्कृति- श्यामाचरण दुबे
9. झारखंड के आदिवासियों के बीच : एक एक्टिविस्ट के नोट्स- वीर भारत तलवार, भारतीय ज्ञानपीठ
10. झारखंड आंदोलन के दस्तावेज़- वीर भारत तलवार, नवारूण प्रकाशन
11. झारखंड में मेरे समकालीन- वीर भारत तलवार, अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली
12. झारखंड की समरगाथा- शैलेंद्र महतो
13. बिरसा मुंडा और उनका आंदोलन- कुमार सुरेश सिंह
14. आदिवासी स्वर और नई शताब्दी- रमणिका गुप्ता, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
15. आदिवासी स्वशासन- ब्रह्मदेव शर्मा
16. आदिवासी विकास- ब्रह्मदेव शर्मा
17. आदिवासी संघर्ष गाथा- विनोद कुमार, प्रकाशन संस्थान
18. जनजातीय भारत- नदीम हसनैन
19. आदिवासी समाज, साहित्य और राजनीति- केदार प्रसाद मीणा, अनुज्ञा प्रकाशन, दिल्ली
20. आदिवासी : विकास से विस्थापन- रमणिका गुप्ता, राधाकृष्ण प्रकाशन
21. आदिवासी अस्मिता: प्रभुत्व और प्रतिरोध- अनुज लुगुन
22. झारखंड: अंधेरे से साक्षात्कार- अभिषेक कुमार यादव, मीडिया स्टडीस ग्रुप, दिल्ली।
23. एल पी विद्यार्थी, बी के रॉय बर्मन- दी ट्राइबल कल्चर ऑफ इंडिया।
24. भारत का आदिवासी स्वर- रमणिका गुप्ता, अनन्य प्रकाशन
25. अपना-अपना युद्ध- वाल्टर भेंगरा 'तरुण' सत्यभारती प्रकाशन, रांची

एम.फिल. – चतुर्थ पत्र
ऐच्छिक पत्र
HIN – 636
आधुनिक भारतीय उपन्यास साहित्य

क्रेडिट- 04
पूर्णांक- 100
अंक विभाजन (सत्रांत परीक्षा/प्रायोगिक/आंतरिक परीक्षा) : {75/00/25}
क्रेडिट अवधि एवं इकाइयां: 40 घंटे और चार इकाई

उद्देश्य: इस प्रश्नपत्र में भारतीय भाषाओं के उपन्यासों का अध्ययन किया जाएगा । इसका उद्देश्य हिन्दी उपन्यासों के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं में लिखे गये उपन्यासों की विषयवस्तु और संरचना से विद्यार्थियों को परिचित कराना है।

इकाई 1: भारतीय उपन्यास साहित्य का उद्भव और विकास, भारतीय नवजागरण, उन्नीसवीं शताब्दी के भारतीय उपन्यासों की प्रमुख प्रवृत्तियाँ- सुधारवादी, राष्ट्रवादी, ऐतिहासिक, तिलिस्मी-ऐयारी , जासूसी। व्याख्यान – 10

इकाई 2**:** बीसवीं शताब्दी और भारतीय उपन्यास
भारतीय उपन्यास **;** स्वतंत्रता-पूर्व के भारतीय उपन्यास।
स्वातंत्र्योत्तर भारतीय उपन्यासः देश विभाजन से सम्बन्धित उपन्यास , आंचलिक उपन्यास , दलित उपन्यास, स्त्रीवादी उपन्यास। व्याख्यान – 10

इकाई 3: **निम्नलिखित में से किसी एक उपन्यास का अध्ययन-**
क. ग्लोबल गांव के देवता – रणेन्द्र
ख. इदन्नमम – मैत्रेयी पुष्पा व्याख्यान – 10

इकाई 4 : **निम्नलिखित में से किसी एक उपन्यास का अध्ययन**
क. **मछुआरे** – तकषी शिवशंकर पिल्लै
ख. **मत्स्यगंधा** – होमेन बरगोहाईं
ग. **पांचजन्य -** गजेन्द्र कुमार मित्र व्याख्यान – 10

उपलब्धियां : इस पत्र के अध्ययन के उपरांत शोधार्थी आधुनिक भारतीय उपन्यास के लोकवृत्त से परिचित हो सके। इस पत्र में शोधार्थी हिन्दी उपन्यास के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं की उपन्यास-परम्परा और उनमें निहित प्रवृत्तियों से अवगत हो पाए। इस पत्र में प्रतिनिधि तौर पर हिन्दी उपन्यास के साथ अन्य भारतीय साहित्य के उपन्यासों का अध्ययन कर सके।

निर्देश:

(i) प्रत्येक इकाई से दो-दो प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से किसी एक का उत्तर लिखना होगा। 15x4= 60

(ii) कुल पांच टिप्पणियां पूछी जायेंगी जिनमें से तीन के उत्तर लिखने होंगे। प्रत्येक इकाई से कम से कम एक टिप्पणी अवश्य पूछी जायेगी। 5x3= 15

सहायक ग्रंथ:

1. उपन्यास का शिल्प -गोपाल राय, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी , पटना।
2. हिन्दी उपन्यासः एक अन्तर्यात्रा - रामदरश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. उपन्यास का यथार्थ और रचनात्मक भाषा -परमानन्द श्रीवास्तव, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
4. हिन्दी उपन्यास कोशः खण्ड- 1 - गोपाल राय, ग्रंथ निकेतन, पटना।
   हिन्दी उपन्यास कोशः खण्ड- 2 - गोपाल राय, ग्रंथ निकेतन, पटना।
5. हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद - त्रिभुवन सिंह, हिंदी प्रचारक संस्थान, वाराणासी।
6. भारतीय उपन्यास कथासार - प्रबंध संपादक- प्रभाकर माचवे, भारतीय भाषा परिषद्, कलकत्ता।
7. बांग्ला साहित्य का इतिहास - सुकुमार सेन, साहित्य अकादमी , नई दिल्ली।
8. रवीन्द्र नाथ टैगोर - साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।
9. राग दरबारीः आलोचना की फाँस - सं. रेखा अवस्थी, राजकमल, दिल्ली।
10. भारतीय उपन्यास : दशा और दिशा - सत्यकाम, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली

****

एम.फिल. – चतुर्थ पत्र
ऐच्छिक पत्र
HIN – 637
आधुनिक हिन्दी कविता
(पाठ और समीक्षा)

क्रेडिट- 04
पूर्णांक- 100
अंक विभाजन (सत्रांत परीक्षा/प्रायोगिक/आंतरिक परीक्षा) : {75/00/25}
क्रेडिट अवधि एवं इकाइयां: 40 घंटे और चार इकाई

उद्देश्य:

क. आधुनिकता , नवजागरण एवं राष्ट्रवाद की अवधारणा और उसकी प्रक्रिया से परिचित हो सकेंगे।

ख. आधुनिक हिंदी कविता के परिदृश्य और उसकी प्रवृत्तियों से परिचित हो सकेंगे।

ग. आधुनिक हिंदी कविता और कवियों के अध्ययन - विश्लेषण की तकनीक सीख सकेंगे।

घ. हरिऔध , जयशंकर प्रसाद और महादेवी वर्मा की कविताओं के आधार पर इन कवियों की विशिष्टताओं से अवगत हो सकेंगे।

ङ. दिनकर , नागार्जुन और भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं के माध्यम से प्रगतिवादी और प्रयोगवादी साहित्य की काव्यसंवेदना और उनके सामाजिक और साहित्यिक सरोकारों से परिचित हो सकेंगे।

च. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना , त्रिलोचन शास्त्री और राजेश जोशी की कविताओं के माध्यम से नयी कविता और समकालीन कविता की काव्य-संवेदना से परिचित हो सकेंगे।

इकाई 1: **अवधारणाएँ :**

(क) मध्यकालीनता और आधुनिकता ,
(ख) परंपरा और नवीनता ,
(ग) नवजागरण , राष्ट्रवाद। व्याख्यान – 10

इकाई 2 **: आधुनिक हिन्दी कविता (छायावाद तक)**

(क) हरिऔध : प्रिय प्रवास , हिन्दी बुक सेंटर , दिल्ली।
पाठ्य छन्द- प्रारम्भिक 10 छंद
(ख) जयशंकर प्रसाद : लहर (काव्य संग्रह) . लोकभारती , इलाहाबाद।
पाठ्य कविता - आत्मकथा
(ग) महादेवी वर्मा: प्रतिनिधि कविताएँ , राजकमल प्रकाशन , दिल्ली।
पाठ्य कविता- मधुर-मधुर मेरे दीपक जल! व्याख्यान – 10

इकाई 3: **छायावादोतर हिन्दी कविता (प्रयोगवाद तक)**

(क) रामधारी सिंह दिनकर : कुरुक्षेत्र , भारती भवन , पटना।

पाठ्य छंद - पष्ट सर्ग के प्रारंभिक 10 छंद

(ख) नागार्जुन : प्रतिनिधि कविताएँ , राजकमल प्रकाशन , दिल्ली।

पाठ्य कविता- कालिदास , खुरदरे पैर

(ग) भवानी प्रसाद मिश्रः प्रतिनिधि कविताएँ , राजकमल प्रकाशन , दिल्ली।

पाठ्य कविता- 'गीतफरोश' व्याख्यान – 10

इकाई 4: **समकालीन हिन्दी कविता (नयी कविता से अब तक)**

(क) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना : प्रतिनिधि कविताएँ , राजकमल प्रकाशन , दिल्ली।

पाठ्य कविता - गोबरैले

(ख) त्रिलोचन शास्त्री : प्रतिनिधि कविताएँ , राजकमल प्रकाशन , दिल्ली।

पाठ्य कविता – भीख माँगते उसी त्रिलोचन को देखा कल

(ग) राजेश जोशी- दो पंक्तियों के बीच (काव्य संग्रह) , राजकमल प्रकाशन , दिल्ली।

पाठ्य कविता- इत्यादि व्याख्यान – 10

उपलब्धियां : इस पत्र के माध्यम से शोधार्थी समकालीन सन्दर्भों में मध्यकालीन युगबोध तथा आधुनिकता आधारित दृष्टिकोण से अवगत हुए। इस पत्र में विद्यार्थियों ने नवजागरण और राष्ट्रवाद को केन्द्र में रखते हुए कविता के क्षेत्र में हुए बदलाव का अध्ययन किया। आधुनिक हिन्दी कविता के शीर्ष प्रतिनिधि कविताओं को विभिन्न कालानुक्रमों तथा काव्य-प्रवृत्तियों के अनुरूप भलीभाँति जान एवं समझ सके।

निर्देश:

(i) प्रत्येक इकाई से दो-दो प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से किसी एक का उत्तर लिखना होगा। 15x4= 60

(ii) कुल पांच टिप्पणियां पूछी जायेंगी जिनमें से तीन के उत्तर लिखने होंगे। प्रत्येक इकाई से कम से कम एक टिप्पणी अवश्य पूछी जायेगी। 5x3= 15

सहायक ग्रंथः

1. प्रसाद का काव्य - प्रेमशंकर , वाणी प्रकाशन , दरियागंज , दिल्ली .
2. नई कविता के प्रतिमान- लक्ष्मीकांत वर्मा , लोकभारती प्रकाशन , इलाहाबाद
3 कविता का यथार्थ- डॉ . परमानन्द श्रीवास्तव , राज कमल प्रकाशन , दिल्ली
4. कविता के सम्मुख- डॉ . गोविंद प्रसाद , वाणी प्रकाशन , दरियागंज , दिल्ली
5. समकालीन काव्य यात्रा - नंद किशोर नवल , राज कमल प्रकाशन , दिल्ली
6. नई नविता और अस्तित्ववाद - रामविलास शर्मा , राज कमल प्रकाशन , दिल्ली
7. समकालीन कविता और कुलीनतावाद - अजय तिवारी , राधाकृष्ण प्रकाशन , दिल्ली
8. रामधारी सिंह दिनकर - विजेन्द्र नारायण सिंह , साहित्य अकादमी , नई दिल्ली
9. सर्वेश्वर दयाल सक्सेनाः दृष्टि और सृष्टि, प्रो . सुशील कुमार शर्मा , शांति मुद्रणालय , दिल्ली
10. हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि- डॉ . द्वारिकाप्रसाद सक्सेना , विनोद पुस्तक मंदिर , आगरा - 10

एम.फिल.– चतुर्थ पत्र
ऐच्छिक पत्र
HIN – 638
हिन्दी साहित्य की विविध विधाएँ
(कविता, उपन्यास, कहानी, नाटक एवं व्यंग्य साहित्य)

क्रेडिट- 04
पूर्णांक- 100
अंक विभाजन (सत्रांत परीक्षा/प्रायोगिक/आंतरिक परीक्षा) : {75/00/25}
क्रेडिट अवधि एवं इकाइयां: 40 घंटे और चार इकाई

उद्देश्य:

क. आधुनिक कविता के सम्पूर्ण भाव-बोध से उत्पन्न सामाजिक परिवर्तन को समझ सकेंगे।
ख.आधुनिक हिंदी कहानी के परिदृश्य और उसकी प्रवृत्तियों से परिचित हो सकेंगे।.
ग.आधुनिक हिंदी उपन्यास के अध्ययन - विश्लेषण की तकनीक सीख सकेंगे।
घ. कहानीकारों एवं उपन्यासकारों की रचनाओं के आधार पर उनकी विशिष्टताओं से अवगत हो सकेंगे।
ङ. आधुनिक कहानी की अवधारणा और उसकी प्रक्रिया से परिचित हो सकेंगे। कहानी के विकास को समझ सकेंगे।
च. नाटक एवं व्यंग्य साहित्य की भावव्यंजना से आत्मसाक्षात्कार करने में सफल हो सकेंगे।

इकाई -1 : **कविता**

अभिमन्यु अनत- नि:शुल्क मौत,
अशोक वाजपेयी - अपनी आसन्नप्रसवा माँ के लिए

कवियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व, सामाजिक परिप्रेक्ष्य में कविता का अभिप्राय, काव्य-भाव का चित्रांकन, काव्य के विविध रूप एवं कविता की विकास-यात्रा, कविता का सामाजिक-सरोकार, कविता की समृद्ध परंपरा में आधुनिक कवियों का योगदान। व्याख्यान – 10

इकाई – 2 : **उपन्यास एवं कहानी**

'कितने पाकिस्तान' - कमलेश्वर **:** व्यक्तित्व एवं कृतित्व' उपन्यास के चरित्रों का चरित्रांकन 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में व्यक्त राजनैतिक चेतना 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास की समस्याएँ ' कितने पाकिस्तान ' उपन्यास में व्यक्त नारी चेतना। व्याख्यान – 10

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास का कथानक, 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में व्यक्त साम्प्रदायिकता - उपन्यास कला के आधार पर 'कितने पाकिस्तान' का मूल्यांकन, भारत विभाजन की त्रासदी और 'कितने पाकिस्तान' 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास का अन्त।

कहानी **:** तीसरी कसम - फणीश्वरनाथ 'रेणु',

जिंदगी और जोंक - अमरकांत,.

बेटी - मैत्रेयी पुष्पा,

प्रेत कामना - मनीषा कुलश्रेष्ठ

कहानियों के कथानक का अभिप्राय, कहानियों में अभिव्यक्त प्रेम स्वरूप, जीवन संघर्ष, जीवन मूल्य, सामाजिक परम्परा आदि का मूल्यांकन एवं सम्बंधित समस्या पर विचार-विमर्श। व्याख्यान – 10

इकाई -3 : **नाटक**

'एक और द्रोणाचार्य का मूल्यांकन'- शंकरशेष : व्यक्ति एवं कृतित्व, नाट्यकला के आधार पर 'एक और द्रोणाचार्य का मूल्यांकन' 'एक और द्रोणाचार्य' नाटक की प्रतीकात्मकता एक और द्रोणाचार्य नाटक में पौराणिकता एवं कल्पना का समन्वय।

'एक और द्रोणाचार्य' नाटक का कथासार – 'एक और द्रोणाचार्य' नाटक के पात्रों का चरित्रांकन – 'एक और द्रोणाचार्य' नाटक की मिथकीयता 'एक और द्रोणाचार्य' नाटक में शिक्षण व्यवस्था। व्याख्यान – 10

इकाई - 4 : **हिन्दी व्यंग्य साहित्य**

उद्भव एवं विकास, हिन्दी व्यंग्य रचनाओं में हरिशंकर परसाई का स्थान, 'काग भगोड़ा' में सामाजिक चेतना - 'काग भगोडा' में निरूपित व्यंग्य निबंधों की भाषा - शैली।

हरिशंकर परसाई : व्यक्तित्व एवं कृतित्व हरिशंकर परसाई की व्यंग्य रचनाओं में राजनैतिक व्यंग्य ' काग भगोडा ' हरिशंकर परसाई की व्यंग्य - दृष्टि , 'काग भगोड़ा' में निरूपित व्यंग्य निबंधों में भ्रष्टाचार। व्याख्यान – 10

उपलब्धियां : इस पत्र के माध्यम से शोधार्थी हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं को सम्पूर्णता में जान पाए तथा इस पत्र द्वारा वे कविता, उपन्यास, कहानी, नाटक एवं व्यंग्य साहित्य को समग्रता में समझ सके। इस पत्र के अन्तर्गत हिन्दी साहित्य की युग अथवा कालखण्ड विशेष की प्रतिनिधि कविताओं, उपन्यास एवं कहानी, आदि के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी प्राप्त की और इनसे परिचित हुए।

निर्देश:

(i) प्रत्येक इकाई से दो-दो प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से किसी एक का उत्तर लिखना होगा। 15x4= 60

(ii) कुल पांच टिप्पणियां पूछी जायेंगी जिनमें से तीन के उत्तर लिखने होंगे। प्रत्येक इकाई से कम से कम एक टिप्पणी अवश्य पूछी जायेगी। 5x3= 15

संदर्भ ग्रंथ :

(1) एक दुनिया समानांतर : संपादक -राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

(2) रंग-रूप रस-गंध : सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली

(3) समग्र कहानियाँ : मैत्रेयी पुष्पा, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली

(4) कहानी का वर्तमान : जानकी प्रसाद शर्मा, राजसूर्य प्रकाशन, दिल्ली

(5) हिंदी कहानी का विकास : मधुरेश , लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

(6.) हिन्दी नाटक : प्रयोग के संदर्भ में - डॉ . सुषमा बेदी - सूर्य प्रकाशन , नई सड़क , दिल्ली

(7) समकालीन हिन्दी नाटक : डॉ . सुन्दरलाल कथूरिया - भारतीय ग्रंथ निकेतन , नई दिल्ली

(8) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक : समस्या और समाधान - डॉ . दिनेशचंद्र शर्मा- पंचशील प्रकाशन , जयपुर

(9) हिन्दी निबंध के सौ वर्ष : डॉ . मृत्युंजय उपाध्याय भारतीय ग्रंथ निकेतन , नई दिल्ली

(10)हिन्दी ललित निबंध : स्वरूप एवं मूल्यांकन - संतराय देरावाला - पंचशील प्रकाशन , जयपुर

एम.फिल. – चतुर्थ पत्र

ऐच्छिक पत्र

HIN – 639

प्रयोजनमूलक हिन्दी : सर्जनात्मक लेखन एवं संचार प्रौद्योगिकी

क्रेडिट- 04

पूर्णांक- 100

अंक विभाजन (सत्रांत परीक्षा/प्रयोगिक/आंतरिक परीक्षा) : {75/00/25}

क्रेडिट अवधि एवं इकाइयां: 40 घंटे और चार इकाई

उद्देश्य: इस पत्र का उद्देश्य शोधार्थियों में हिन्दी के प्रयोजनमूलक स्वरूप तथा लेखन-शैली से अवगत कराना है। संचार-क्रांति के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिन्दी की व्यावहारिक कामकाजी स्थिति और उनके कार्य-प्रणाली से परिचित कराना है। साथ ही शोधार्थियों को सर्जनात्मक लेखन की कला-विधि एवं प्रविधि से परिचित कराना इस पत्र का अभीष्ट है।

इकाई 1 : **हिन्दी भाषा का प्रयोजनमूलक सन्दर्भ तथा स्वरूप**

हिन्दी भाषा का सामान्य परिचय, हिन्दी कौशल-बोलना, सुनना, पढ़ना और लिखना। हिन्दी भाषा की विविध शब्दावलियाँ-सामान्य, विशिष्ट, पारिभाषिक। हिन्दी की शब्द-सम्पदा-तत्सम, तद्भव, देशज, क्षेत्रिय, आयातीत शब्द इत्यादि। मौखिक एवं लिपिबद्ध भाषा। हिन्दी भाषा की विभिन्न प्रयुक्तियाँ एवं सेवा-माध्यम-वार्ता क्षेत्र, वार्ता प्रकार, वार्ता शैली इत्यादि। व्याख्यान – 10

इकाई 2 : **हिन्दी में सर्जनात्मक लेखन के विविध आयाम**

सर्जनात्मक लेखन की प्रविधि-अर्थ, प्रकृति, क्षेत्र, उपयोगिता एवं महत्त्व। साहित्यिक सृजनशीलता-अर्थ, प्रकार एवं लेखन-विधि। फीचर एवं साक्षात्कार लेखन। जनसंचार माध्यमों के लिए अनुवाद-कार्य, अनूदित भाषा एवं अनुसृजन। व्याख्यान – 10

इकाई 3 : **संचार-भाषा हिन्दी और रचना प्रक्रिया**

संचार-भाषा हिन्दी : अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप। जनसंचार के प्रमुख माध्यम एवं प्रकार। संचार माध्यमों की भाषा-मुद्रित एवं इलेक्ट्रानिक माध्यम का विशेष सन्दर्भ। विज्ञापन और प्रचार। राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय समाचार एजेंसियाँ तथा वैश्विक हिन्दी। व्याख्यान – 10

इकाई 4: **प्रकार्यात्मक हिन्दी के विशिष्ट स्वरूप एवं संचार प्रौद्योगिकी**

वर्तमान सन्दर्भ में विकसित जनसंचार माध्यमों में प्रयुक्त तकनीक एवं प्रौद्योगिकी। इंटरनेट और यूनिकोड। हिन्दी लेखन में नवाचार।

प्रयोजनमूलक हिन्दी के अन्तर्गत सर्जनात्मक कौशल निर्माण एवं विकास सम्बन्धी प्रायोगिक कार्य ।

व्याख्यान – 10

उपलब्धियां : इस पत्र के अध्ययन के उपरांत शोधार्थी हिन्दी भाषा की सामान्य एवं विशिष्ट प्रकृति, प्रयोग आधारित स्वरूप तथा पारिभाषिक शब्दावलियों में प्रयोजनमूलक हिन्दी की अवधारणा तथा सर्जनात्मक लेखन की प्रविधियों से परिचित हुए। इस पत्र में शोधार्थी संचार क्रांति आधारित माध्यम लेखन, साक्षात्कार एवं फीचर लेखन तकनीक से भलीभाँति अवगत हो सके तथा जनसंचार माध्यमों की भाषा में सृजनशीलता के विभिन्न उपक्रमों को बहुआयामी दृष्टि से जानने-समझने में सफल हुए।

निर्देश:

(i) प्रत्येक इकाई से दो-दो प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से किसी एक का उत्तर लिखना होगा। 15x4= 60

(ii) कुल पांच टिप्पणियां पूछी जायेंगी जिनमें से तीन के उत्तर लिखने होंगे। प्रत्येक इकाई से कम से कम एक टिप्पणी अवश्य पूछी जायेगी। 5x3= 15

संदर्भ ग्रंथ :

1. व्यावसायिक सम्प्रेषण - डॉ. हंसराज पाल, डॉ. मंजुलता शर्मा, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
2. व्यावसायिक सम्प्रेषण - डॉ. अनूपचन्द्र पु. भायाणी, राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली।
3. राष्ट्रभाषा और हिन्दी - राजेन्द्र मोहन भटनागर , केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।
4. सरकारी कार्यालय में हिन्दी का प्रयोग - गोपीनाथ श्रीवास्तव, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धान्त और प्रयोग - डॉ. दंगल झाल्टे, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।
6. प्रयोजनमूलक हिन्दी - डॉ. राजनाथ भट्ट, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला।
7. प्रयोजनमूलक हिन्दी - रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान , आगरा।
8. सूचना प्रौद्योगिकी और पत्रकारिता - अशोक मलिक, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला।
9. फिल्म अथवा टीवी को अपना कार्य-क्षेत्र बनाएँ - विनोद तिवारी, पुस्तक महल, दिल्ली।
10. पत्रकारिता: मिशन से मीडिया तक - अखिलेश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
11. संचार माध्यम लेखन - गौरीशंकर रैणा, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।
12. मीडिया लेखन - चन्द्र प्रकाश मिश्र
13. आधुनिक समाचार-पत्र: मुद्रण और पृष्ठ-सज्जा - श्याम सुंदर शर्मा, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
14. संचार भाषा हिंदी - सूर्यप्रसाद दीक्षित, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
15. रेडियो, साहित्य और पत्रकारिता - डॉ. अकेलाभाई, समय प्रकाशन, नई दिल्ली।
16. मीडिया और हमारा समय - प्रांजल धर, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली।
17. टेलीविज़न की भाषा - हरीश चन्द्र बर्णवाल, राधाकृष्ण प्रकाशन, इलाहाबाद।
18. टेलीविजन : सिद्धांत और टेकनीक - मथुरादत शर्मा
19. टेलीविज़न लेखन - असगर वजाहत और प्रभात रंजन
20. रेडियो लेखन - मधुकर गंगाधर
21. संचार माध्यम : तकनीक और लेखन - डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ , श्याम प्रकाशन जयपुर।

22. सूचना प्रौद्योगिकी के दौर में करियर - विनीता सिंघल, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली।
23. न्यू मीडिया और बदलता भारत - प्रांजल धर, कृष्णकांत, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली।
24. बोलने की कला - डॉ. भानुशंकर मेहता, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
25. आधुनिक जनसंचार और हिन्दी - डॉ. हरिमोहन
26. जनमाध्यम : संप्रेषण और विकास - देवेन्द्र इस्सर
27. कम्प्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग - विजय कुमार मल्होत्रा
28. इंटरनेट का संक्षिप्त इतिहास - ब्रूस स्टर्लिंग

एम.फिल. - चतुर्थ पत्र
ऐच्छिक पत्र
HIN – 640
लोक साहित्य: शोध की संभावनाएं

क्रेडिट- 04
पूर्णांक- 100
अंक विभाजन (सत्रांत परीक्षा/ प्रायोगिक/ आतंरिक परीक्षा) : [75/00/25]
क्रेडिट अवधि एवं इकाइयाँ : 40 घंटे और 4 इकाई

उद्देश्य :

क. लोक साहित्य पर शोध की संभावनाओं के बारे में शोधार्थियों को अवगत कराना।
ख. लोक साहित्य की विविध विधाओं तथा उनके विधागत वैशिष्ट्य से शोधार्थियों का परिचय कराना।
ग. लोक साहित्य में शोध के क्षेत्र तथा अध्ययन-दृष्टियों के बारे में शोधार्थियों को जानकारी प्रदान करना।
घ. पूर्वोत्तर तथा विशेषकर अरुणाचल प्रदेश में उपलब्ध लोक साहित्य के प्रति शोधार्थियों का ध्यान आकर्षित कराना तथा इस विषय पर शोध के लिए उन्हें प्रेरित करना।
ङ. लोक साहित्य में तुलनात्मक शोध की संभावनाओं से शोधार्थियों को अवगत कराकर उन्हें इस दिशा में शोध कार्य करने हेतु प्रेरित-प्रोत्साहित करना।

इकाई 1: लोक की अवधारणा; लोक साहित्य का अर्थ एवं स्वरूप; भारतीय लोक साहित्य की परम्परा;लोक संस्कृति की अवधारणा; लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति; लोक साहित्य एवं साहित्य; अधुनातन एवं पुरातन लोक तथा लोक साहित्य। व्याख्यान – 10

इकाई 2: लोक साहित्य के विविध रूप: लोक गीत; लोक कथा; लोक गाथा; लोक नाट्य; लोक सुभाषित आदि का वर्गीकरण एवं विशेषताएँ, लोक साहित्य का महत्व, लोक साहित्य की सीमाएं एवं संभावनाएं, लोक साहित्य के संग्रह की आवश्यकता एवं चुनौतियाँ; वर्तमान में लोक साहित्य के अध्ययन की दशा तथा दिशा। व्याख्यान – 10

इकाई 3: लोक साहित्य के अध्ययन की पद्धतियाँ : ऐतिहासिक अध्ययन; तुलनात्मक अध्ययन; समाज-सांस्कृतिक अध्ययन; समाज-भाषिक अध्ययन; दार्शनिक अध्ययन; भाषावैज्ञानिक अध्ययन; काव्यशास्त्रीय अध्ययन; शिल्प की दृष्टि से अध्ययन। व्याख्यान – 10

इकाई 4: पूर्वोत्तर के लोक-साहित्य का वैशिष्ट्य (लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोक-नाट्य तथा लोकसुभाषित के परिप्रेक्ष्य में); अरुणाचल के लोक साहित्य का वैशिष्ट्यगत परिचय (संदर्भ : लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोक-

नाट्य तथा लोकसुभाषित); पूर्वोत्तर के लोक साहित्य पर शोध के विविध आयाम : समाज-सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, दार्शनिक, तुलनात्मक आदि। पूर्वोत्तर के लोक साहित्य पर शोध-संबंधी उपलब्धियां एवं संभावनाएं।

व्याख्यान – 10

उपलब्धियां : इस पत्र के अध्ययन द्वारा शोधार्थी शोध के नए क्षेत्रों को जानकर उन पर शोध कार्य करने की ओर उन्मुख होंगे। लोक साहित्य के क्षेत्र में विभिन्न विषयों को जानने के साथ उन पर अध्ययन की अनेकानेक दृष्टियों को जान सकेंगे तथा नवन्नव विषयों पर शोध कार्य करने की दिशा में अग्रसर होंगे। इस पत्र के अध्ययन द्वारा शोधार्थियों के सम्मुख पूर्वोत्तर के लोक साहित्य से संबन्धित विभिन्न रोचक, उपयोगी और प्रासंगिक तथ्य उजागर हो सकेंगे, जिनपर विस्तार से शोध कर वे वृहत्तर स्तर पर उनकी उपयोगिता सिद्ध कर सकेंगे। पूर्वोत्तर के लोक साहित्य पर परस्परिक तथा हिन्दी के साथ तुलनात्मक शोध कर शोधार्थी राष्ट्रीय स्तर पर भावात्मक ऐक्य को बढ़ावा देने वाले तथ्यों को रेखांकित कर सकेंगे।

निर्देश: (i) प्रत्येक इकाई से दो-दो प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से किसी एक का उत्तर लिखना होगा 15 X 4 = 60

(ii) कुल पांच टिप्पणियां पूंछी जायेंगी जिनमें से तीन के उत्तर लिखने होंगे। प्रत्येक इकाई से कम से कम एक टिप्पणी अवश्य पूछी जायेगी। 5 X 3= 15

सहायक ग्रंथ :-

1. लोक साहित्य विज्ञान - सं. सत्येन्द्र , वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
2. लोक साहित्य की भूमिका - डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी।
3. लोक साहित्य विमर्श - डॉ. श्याम परमार, राजकमल प्रकाशन, वाराणसी।
4. लोक साहित्य और संस्कृति - डॉ. दिनेश्वर प्रसाद, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
5. हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास (16 वां भाग) - नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
6. अरुणाचल के त्योहार - डॉ. धर्मराज सिंह
7. अरुणाचल की आदी जनजाति का समाजभाषिक अध्ययन - डॉ. धर्मराज सिंह
8. मनोरम भूमि अरुणाचल - माता प्रसाद
9. अरुणप्रभा - राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की शोध पत्रिका, प्रवेशांक- 2001 तथा संयुक्तांक 2002-2003 (अरुणाचल विशेषांक)।
10. कस्टमरी लॉज ऑफ न्यीशी ट्राइबल ऑफ अरुणाचल प्रदेश - नाबम नाका हिना, आर्ट्स प्रेस, दिल्ली।
11. आदी जनजाति: समाज और लोक साहित्य – डॉ. ओकेन लेगो, यश पब्लिकेशन, दिल्ली।
12. न्यीशी जनजाति का समाजभाषिक अध्ययन – डॉ. जोरम यालम, गौतम बुक सेंटर, दिल्ली।
13. न्यीशी जनजाति का समाज भाषिक अध्ययन – डॉ. जोरम यालम, विजय भारती प्रकाशन, असम।
14. भाषा, संस्कृति और साहित्य - डॉ. हरीशकुमार शर्मा, अनंग प्रकाशन, दिल्ली।
15. फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में लोक-संस्कृति - डॉ. हरीशकुमार शर्मा, जास्मिन पब्लिकेशन, दिल्ली